# श्रद्धेय श्री विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से ......

**श्रीरामशरणम्** दिल्ली, 22 अप्रैल 2007 प्रातः 10.15 बजे

परमात्मा की कृपा अपरम्पार है। परमेश्वर की कृपा को सदैव याद रखो। उसको धन्यवाद करने का ढंग है – राम राम जपना। कभी उलाहने नहीं देने। अगर उसकी कृपा याद रहेगी तो उसने जो मेहरबानियाँ करी हैं, वे भी याद रहेंगी। राम राम जपते रहिएगा।

चाहे देश में हों या विदेश में, ब्रह्म मुहूर्त में उठना सब के लिए ज़रूरी है। उस समय ध्यान में बैठना, प्रार्थना करना, परमात्मा से बातें करना और जाप करना है। उसके बाद दृढ़ संकल्प लेना है कि क्या करना है व क्या नहीं करना है ?

श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य गिरीश शराब के बिना नहीं रह सकते थे। उन्होंने ठाकुर से कहा, ''मैं न तुम्हे छोड़ सकता हूँ न शराब को।'' ठाकुर ने कहा, ''साल में एक दिन पी लिया करो।'' तो वह बोला, ''बाकी 364 दिन क्या करूँगा? मैं इस आज्ञा का पालन नहीं कर सकूँगा।'' ठाकुर बोले, ''ठीक है, रोज़ पियो पर एक ख्याल रखना, माँ को भोग लगा कर ही पीना।'' वह तीन दिन भोग नहीं लगा पाया। जब भी बोतल खोलने की कोशिश करता, कोई न कोई भक्त मन्दिर में आ जाता। ऐसे ही तीन दिन बीत गए। ठाकुर ने कहा कि जब तीन दिन बीत गए हैं तो 30 दिन भी बीत जाएँगे, 30 महीने, 30 साल भी बीत जाएँगे। शिष्य का सत्संकल्प, गुरु महाराज एवं भगवान् की कृपा से यह सब सम्भव है तो शराब कैसे न छूटे !

जो परमात्मा को पिलाया नहीं जा सकता, खिलाया नहीं जा सकता, जो कर्म परमात्मा को चढ़ाया नहीं जा सकता, वह नहीं करना। आप किसी भी डिपार्टमैन्ट में हों, झूठ-बेईमानी का किया कर्म परमात्मा को चढ़ाने लायक नहीं।

एक अफसर, Chain Smoker थे । अच्छी क्वालिटी की सिगरेट पीने की आदत थी। उनके 8 एवं 10 वर्ष के दो पुत्र थे। उसने बच्चों को राख में से बुझी सिगरेट के छोटे टुकड़े उठा कर पीते देखा। उन्हें डांटा। मासूम बच्चों ने कहा, ''पापा आप तो रोज़ लम्बी-लम्बी सिगरेट पीते हो हमने छोटी सी पी ली तो क्या हुआ।'' उस अफसर ने मन ही मन संकल्प किया कि अब वह ज़िन्दगी भर सिगरेट नहीं पिएगा।

आज कल के बच्चे आज्ञा का पालन नहीं करते, आप का अनुकरण करते हैं। आज्ञाकारी नहीं, अनुकरणशील बच्चे हैं। हमारी तरह बुद्धु नहीं; बहुत लायक हैं। आज आप कहते हैं बेटा, छोटा सा पैग तैयार कर दो, तो इस बात को सुनने के लिए तैयार रहें, ''पापा, मार्केट जा रहे हो, शाम को पार्टी है, दो बोतल Whisky की भी लेते आना।'' स्वयं पीने वाला कैसे रोकेगा ?